राधा कृष्ण का प्रेम एक सामाजिक संदेष

डॉ.नसीम बानों
सहा0प्राध्यापक विभागाध्यक्ष – समाजषास्त्र
रा0दु0षास0स्नात0महा0, मण्डला म0प्र0
Corresponding E-mail: chandrakantpatel66@gmail.com

" एक लफ्ज मोहब्बत का अदना सा फसाना है,

सिमटे तो दिले आषिक फैले तो जमाना है। "

आज के इस वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहां व्यक्ति पर्यावरण को बदलने की बात करता है । तथा समाज की सुषिक्षित नई दिषा, चुनौतियां इत्यादि से परिपूर्ण भावी समाज की कल्पना करता है । लेकिन एक बेहतर व भावी समाज की स्थापना केवल कथन,उपदेष,गीता के व्याख्यानों काव्यग्रन्थों, कथा वस्तुओं के पठन पाठन या वाचन से संभव नहीं हो सकता, इसके लिये हमें उन गूढ़ रहस्यों को समझना होगा । जो ष्षायद आने वाली इन पीढ़ियों को प्रेरणा का पाठ पढ़ा सकता है । इन गूढ़ रहस्यों मे प्रमुख रूप से गीता उपदेष कबीरवाणी, रहीम के दोहे, अमृतधारा इत्यादि है जिन्हें समझना मनुष्य की क्षमता से परे हो जाता है । उन्हीं मे सें एक है जिसे मनुष्य सुलझा नहीं पाता है । वह है :– **" राधा–कृष्ण का प्रेम"**

राधा कृष्ण के प्रेम को समझने के लिये हमें प्रेम षब्द को समझना पडेगा । प्रेम ष्षब्द पढने,देखने और बोलने मे जितना सहज व सरल है व्यक्ति उतना उसे समझना आसान नहीं है । क्योंकि **षायर** ने क्या खुब कहा है किः–

"इष्क एक आग का दरिया है और डूब कर जाना है ।"

आज समाज में प्रेम की हर रिष्ते में कमी महसूस की जा सकती है । क्योंकि प्रेम किसी भी समाज की आधारषिला है, यही वह भावना है जो विष्व वन्धुत्तव की भावना को मजबूत बनाती है । समाज में रह रहे प्रत्येक व्यक्ति या जीवित प्राणी प्रेम से ही सुरक्षित होता है । चाहे वह माता–पिता, भाई–बहन, पुत्र–पुत्री, पति–पत्नि किसी भी रिष्ते में हो इसी प्रेम की भावना का निष्चल रूप राधा कृष्ण का प्रेम है ।

राधा के सम्पूर्ण व्यक्त्वि का समाहार उसके एक गुण में होता है, वह है उसका अप्रतिम कृष्ण प्रेम । प्रेम किसी भी रूप में अभिभूत करने वाली भावना है । जहां तक नजर डाले कुदरत में प्रेम की ही

तरंगें,जंगल,नदी,पहाड़,झरने,पषु, पक्षी, आसमान, धरती सभी में दिखाई पड़ती है । आदम हव्वा के प्रेम की परिणीति ही दुनिया है । इस तरह प्रेम :–

" पैगम्बरे इष्क हूँ समझ मेरा मुकाम सदियों में फिर सुनाई देगा ये पयाम "

यही प्रेम जब राधा कृष्ण के रूप में है तो इसका महत्व बढ़ जाता है । कृष्ण के व्यक्त्वि का पूरक राधा को माना गया है । राधा सहज रूप की राषि और सुन्दरता का पुंज है ।

राधा कृष्ण का प्रथम परिचय कृष्ण के भौरा चकड़ोरी के खेल के समय होता है । बाल्य काल्य की प्रण लीला के उपयुक्त समय मे कृष्ण को वह लड़कियों के साथ रवि तनया तट पर अचानक दिखाई पड़ती है, उसके नयन विषाल है, भाल पर रोली लगी हुई है पीठ पर वेणी लटक रहीं है । तथा गोरे तन पर वह नीले रंग की फरिया और नीला वस्त्र पहने हुये है । इस अल्पमय सुकुमारी को देखते ही ष्याम रीझ गये ।

राधा का रूप सौन्दर्य मन्त्र मुग्ध करने वाला बतलया गया है, परंतु राधा कृष्ण के सौन्दर्य की दीवनी थीं । इसलिये कहा गया है कि :–

" मधुवन मे वसॅत सा सजीला है वो रूप,

बरखा ऋतु की तरह रंगीला है वो रूप,

राधा की झपक, कृष्ण की बरजोरी है,

गोकुल नगरी की रासलीला है वो रूप। "

कृष्ण प्रेम में ही राधा के सौन्दर्य की और उसके गुणों की पूर्णता है, कृष्ण के बिना राधा कुछ नहीं है । राधा का पूर्ण सौन्दर्य कृष्ण प्रेम है, यह अलौंकिक प्रेम राधा की नजरों से ही झलकता है । गोपिंया कहती है ष्याम को केवल राधा ने ही जाना है राधा का स्वभाव की कुछ और है हम हरि को कुछ और ही ढ़ग से देखती है । सत्य भाव से राधा ही निहारती है । गोपियां कहती है :– मैनें तो सिर्फ उनके नयन ही देखें है उसे देखकर ही नजरें भर आती है कुछ और देखा ही नहीं जाता हिम्मत ही साथ नहीं देती है । ६

षायर कहता है :–

" हम उसको देखकर आह किस तरह देखें,

नजारा–ए–रूख जानां हुआ भी नहीं। "

राधा गोपियों से पूछंती है कृष्ण कैसे दिखते है,प्रतिदिन कृष्ण से मिलकर भी राधा का गोपियों से ऐसा पूछना उनके प्रेम की महानता को प्रकट करता है । राधा कृष्ण के प्रेम की उसकी निष्छलता ने महान बना दिया । राधा–कृष्ण के प्रेम को पाकर भी उनके लिये व्याकुल हुआ करती थी । उनकी व्याकुलता की

सीमा नहीं थी । जैसे मृग के पेट में कस्तुरी होती है । और वह जंगल मे उसकी खोज मे घुमता रहता है, उसकी सुंगध उसके अंदर से आती है, वह उसे बाहर ढुढता रहता है । इसी प्रकार राधा भी कृष्ण के प्रेम में दीवानी होकर गोपियों से कृष्ण के बारे में पूछती रहती थी । क्या तुमने कृष्ण को देखा है, कृष्ण का किसी स्त्री से मिलना, बात करना उनको विचलित कर देता था । यह स्थिति प्रेम की पराकाष्ठा कहलाती है । राधा के प्रेम को महान बनाने वाली यही सर्वश्रेष्ठ भावना है । **क्योंकि कहा गया है :–**

" हर साज से होती नहीं ये धुन पैदा होता है बड़े जतन से ये गुन पैदा। "

राधा कृष्ण का यह प्रेम अपने इसी रूप में हर जगह, वस्तु लोककथा, लोकगीत,संगीत कहानियों मे फिल्मों मे देखने एवं सुनने को मिलता है ।

समाज में इस तरह के प्रेम को भुला कर प्रेम की परिभाषा ही बदल दी गई है । प्रेम की भावना मे सच्चाई, त्याग की जगह झूठ,स्वार्थ,हिंसा, लालच,घमण्ड बदला आदि को षामिल कर लिया गया है । इस अनूठे प्रेम के विषय को समाज में फिर से लोगों को समझना आवष्यक है ।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भारतीय कवि श्री राधा रमाकांत रथ पेज नं. 26,27
2. सूरदास– ब्रजेष्वर वर्मा लोकभारती प्रकाषन पेज नं. 309 से पेज नं. 339
3. मीरा की प्रेम साधना डॉ. भुवनेष्वर नाथ मिश्र माध्व राजकमल प्रकाषन पेज क्र. 43
4. बज्में जिंदगी रंगे षायरी फिराक गोरखपुरी भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाषन पेज क्रमांक 18,29
5. इंटरनेट सर्च (राधा कृष्ण का प्रेम एवं दर्षन)
6. व्यक्तिगत चर्चा